MAA OMWATI DEGREECOLLEGE,

HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

M.A(History) 2nd Semester,

STATE IN INDIA (Paper-5)

M.A (History) 2 semester PAPER- 5
Important questions STATE IN INDIA

Page :
Date :

Unit-I

Q-1. मुगल राज्य के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

Ans:- मुगल व्यवसाय एक समय में भारत के सम संगठित एवं सुसभ्य भागों में फैली हुई थी। तथा उसका प्रभाव बहुत से क्षेत्रों में अंग्रेजी शासन व्यवस्था के अन्तर्गत भी पाया जाता था। मुगल विदेशी थे तथा वे अपने से पहले के शासकों से अलग रखा। अकबर ने इस व्यवस्था में भारतीय व्यवस्था के आदर्श सम्मिलित करके इसे नया स्वरूप प्रदान किया। मुगल प्रशासनिक व्यवस्था का आधार भूत उद्देश्य साम्राज्य के विभिन्न भागों पर कठोर नियंत्रण स्थापित करना तथा मुगल सत्ता को चुनौती देने वाले विरोधी तत्वों को रोकना था। इस प्रकार मुगलों ने विरोधी राजाओं एवं सरदारों को न लेकर प्रशासनिक व्यवस्था में स्थान दिया, अपितु उनसे सैनिक सेवाएं भी प्राप्त की की।

Scanned with OKEN Scanner

1.] मुगल प्रशासन (State Under Mugals) →

राज्य के स्वरूप की धारणा प्रशासन से जुड़ी है। बाबर ने 1526 ई० में पानीपत के प्रथम युद्ध में लोदी सम्राट इब्राहिम लोदी को पराजित करके भारत में मुगल राज्य की स्थापना की। मुगल साम्राज्य में तुर्की एवं मंगोल परंपराओं का मिश्रण बताया है। इन दोनों परंपराओं ने मिलकर अत्यधिक केन्द्रीयकृत शासन तन्त्र की स्थापना की। मुगल साम्राज्य को समझने के लिए निम्न पक्षों का समझना अनिवार्य है। —

a) राज्य का स्वरूप
b) राजत्व (पादशाहत) का सिद्धान्त

a) राज्य का स्वरूप →

इतिहासकारों ने मुगल शासन के स्वरूप को समझने के लिए अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। उन्होंने मुगल राज्य को धर्मनिरपेक्ष सैनिक, सांस्कृतिक, निरंकुश, फारसी हिन्दुस्तानी, तुर्की, मंगोल तथा इन सबका मिश्रण बताया है।

i) सेना पर आधारित राज्य →

सर जादुनाथ के अनुसार "मुगल राज्य की उत्पत्ति का आधार सैनिक था" मुगलों ने सैनिक बल के आधार पर ही भारत में प्रविवेश किया था।

ii) शासन एवं देशी व विदेशी तत्वों का सम्मिश्रण →

मुगलों का शासन देशी तथा विदेशी तत्वों के मिश्रण से बना था। साम्राज्य के शासन संबंधी सिद्धान्त, धार्मिक नीति, उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था आदि पूर्णतः विदेशी थी।

iii) केन्द्रीयकृत राज्य →

अनेक प्रसिद्ध विद्वानों नूरुल हसन, आदि अकबर के अधीन मुगल राज्य को केन्द्रीयकृत राज्य मानते थे।

Scanned with OKEN Scanner

इस राज्य के सम्राट को असीमित अधिकार प्राप्त थे। प्रशासनिक सुविधा के अनुसार साम्राज्य को सूबों, जिलों एवं परगनों में बाँटा था।

iv) धर्म - अप्रभावित राज्य ⟹

प्रो० आर० आर० शर्मा के अनुसार "मुगल साम्राज्य धर्म - अप्रभावित राज्य था।" एक धार्मिक राज्य में ईश्वर की प्रभुसत्ता में विश्वास होता था। पुरोहितों एवं धार्मिक अधिकारियों के इशारों पर शासन चला करता है परंतु मुगल राज्य इस्लामी कानून के अनुसार नहीं चलता था। यह 'सुलह-ए-कुल' (सभी के साथ उदारता का व्यवहार) के सिद्धान्त पर आधारित था। औरंगजेब जैसे धर्मान्ध सम्राट के अनुसार शासनकाल में भी अनेक कट्टर मुसलमान थे। और वह सम्राट की इस नीति का विरोध भी करते थे।

v) सांस्कृतिक राज्य ⟹

मुगलों के शासनकाल में, विशेष रूप से अकबर के शासनकाल में एक मिश्रित सांस्कृतिक का उद्भव हुआ। अकबर के शासनकाल में सभी वर्गों के लोगों को शासन में स्थान मिला, परिणाम स्वरूप कला एवं साहित्य को उदार संरक्षण प्राप्त हुआ। अकबर ने संस्कृत, अरबी, यूनानी भाषाओं के ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाया। उसके दरबार में संगीत एवं चित्रकारी के क्षेत्र में अनेक हिंदू कलाकारों को आश्रय मिला। उसकी भवन निर्माण कला में इस्लामी, हिंदू, बौद्ध एवं जैन सभी शैलियों का समावेश मिला है। मुगलों के अपनी प्रजा के सुखद तथा उच्चे जीवन की परिस्थितियों के निर्माण का प्रयास किया था।

b) राजत्व (पादशाहत) का सिद्धान्त ⇒

मुगलों अपने साथ राजत्व के जिन सिद्धांतों को लेकर आये थे। वे पूर्णतः इस्लामी नहीं थे। उनमें मंगोल, तुर्की तथा ईरानी परंपराओं का मिश्रण इन विचारों पर भारतीय राजनीतिक परंपराओं का भी प्रभाव पड़ा था। इस राजत्व में एक नये सिद्धांत का उद्भव हुआ था। मुगलों के राजत्व सिद्धान्त की एक झलक 'अबुल- फ़ज़ल' की पादशाहत की पदवी की धारणा की। मुगल काल में राजत्व के दौरान दैवीय सिद्धान्त की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। राजत्व संबंधी मुगलों के इस सिद्धान्त का विकास कई चरणों में हुआ।

बाबर अपने साथ प्रभुसत्ता के तुर्क - मंगोल सिद्धान्त जिसका विकास मध्यवर्ती एशिया में हुआ को लेकर गया था। बाबर के भारत आने से सल्तनत काल के राजत्व सिद्धान्त में परिवर्तन हुआ तथा जहाँ सुलतान ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे। वहीं बाबर ने स्वयं 'पादशाह' की पदवी धारण की। बाबर के पुत्र हुमायूँ ने भी प्रभुत्ता के दैवी सिद्धान्त को मानते हुए पादशाहत को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति ही समझा।

मुगल राजत्व के सिद्धान्त का पूर्ण विकास हमें अकबर काल में दिखाई देता है अकबर के राजत्व संबंधी सिद्धान्त की व्याख्या अकबर के विद्वान अबुल - फजल की व्याख्या में स्पष्ट झलकती है। अबुल फ़ज़ल ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया की बादशाह आम आदमी से अत्यधिक श्रेष्ठ होता है। यह पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि होता है।

तथा उसकी प्रतिच्छाया है अबुल फजल ने 'आइने - अकबरी' मे लिखा है " राजत्व ईश्वर से निकलता प्रकाश है तथा जिसे खुदा ने स्वंय पृथ्वी पर भेजा है बादशाह के दर्शन करना 'ईश्वर को स्मरण करने के बराबर है'। अबुल फजल ने लिखा है कि बादशाह को चाहिए की वह प्रजा को पिता समझने तथा उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते हुए उसका पालन-पोषण करे

मुगलों का केन्द्रीय व प्रान्तीय प्रशासन
Central And Provincial Ad. of the Mughal

Question 2 मुगल शासन व्यवस्था पर एक निबंध लिखिए ⇒

Ans ⇒ मुगलो ने भारत मे आकर दिल्ली सल्तनत की प्रचलित शासन व्यवस्था मे महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। मुगल शासन अत्यधिक केन्द्रीयकृत पर आधारित था। प्रथम दो मुगल सम्राटो बाबर एवं हुमायूं को प्रचलित व्यवस्था मे परिवर्तन करने का समय ही नहीं मिलता। अकबर ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था को निश्चित रूप प्रदान किया सौभाग्य से अकबर को विरासत मे अफगान शासक शेरशाह द्वारा स्थापित नौकरशाही पर आधारित केन्द्रीयकृत, निरंकुश, शासन व्यवस्था, प्राप्त हुई। अकबर ने इस व्यवस्था मे कुछ मौलिक परिवर्तन करके इसे अत्यधिक समय तक मुगलो के शासन का आधार बनी रही।

मुगल शासन व्यवस्था को अध्ययन जिन शीर्षकों के आधार पर किया गया है, वे इस प्रकार है :—

A) केन्द्रीय शासन (Central Administration)

मुगल शासन व्यवस्था का आधार उसका केन्द्रीय शासन था। मुगलों के केन्द्रीय शासन का विवरण इस प्रकार है —

1) सम्राट (Samart) :→ मुगल सम्राट केन्द्रीय प्रशासन का केन्द्रीय बिन्दु था वह राज्य का सर्वैधानिक तथा व्यावहारिक मुखिया था। उसे सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। वह राज्य के अंतिम कानून का निर्माण, प्रशासक, व्यवस्थापक, अंतिम न्यायालय और सेनापति था। उसकी शक्ति पर कोई प्रतिबंध नहीं था। मुगल सम्राटों के निम्न विशेषाधिकार थे —

i) झरोखा दर्शन प्रातःकाल राजमहल में बैठ कर आम जनता को दर्शन देना।

ii) सम्राट के दरबार में आगमन के समय नक्कारा तथा अन्य वाद्य यन्त्रों का बजाया जाना।

iii) सोने एवं रत्नों का तुलादान करवाना।

iv) उपाधियाँ देना।

v) अंग-भंग की सजा देना।

इस प्रकार, मुगल सम्राट का पद पूर्णतया निरंकुश एवं स्वेच्छारी था।

2) मन्त्रिपरिषद (Cabinet) :→ यद्यपि मुगल बादशाह शासन केन्द्र का बिन्दु होता था। परंतु प्रशासन की विभिन्न गतिविधियों को सचालित करना उसके लिए सम्भव नहीं होता। अतः शासन कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए मुगल साम्राटों ने एक मंत्रिपरिषद का गठन किया हुआ था। मंत्रियों को नियुक्त करना एवं उनको पद से हटाना सम्राट

Page :
Date :

व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर करता था। साधारणतया प्रमुख नीति निर्धारित मंत्रियों एवं उनके कार्य विभागों का विवरण इस प्रकार है —

i) प्रधानमन्त्री (Prime – Minister) :→

साम्राज्य में सम्राट के बाद सबसे ऊँचा पद प्रधानमंत्री का होता था जो एक 'वकील' कहलाता था। प्रधान मंत्री बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। बाबर का वकील निजामुद्दीन एवं हुमायु का वकील अमीर बैरम तथा हिन्दूबेग थे। तथा अकबर के समय में यह पद बैरम खाँ के पास था। बैरम खाँ के पश्चात प्रधानमंत्री पद कार्यभार को विभिन्न अधिकारियों में बाँट दिया गया था। तथा प्रधान मंत्री का कार्य दीवान को दे दिया गया।

अबुल फजल ने दीवान को आय और व्यय विभाग का प्रमुख बताया है।

Page :
Date :

वह केन्द्र एवं राज्यों के बीच कड़ी का काम करता था। कुछ अन्य विभाग भी दीवान से जुड़े थे — इनमें मुख्य थे — दीवान-ए-सादात (धार्मिक कार्यों का लेखा-जोखा), दीवान-ए-(खालिसा खालिसा भूमि का), दीवान-ए-आमिर (राजस्व के कार्य के लिए दिये जाने वाले वेतन), दीवान-ए-तन (नकद तनख्वाहों के लिए) दीवान-ए-तवजिह (सैनिक लेखा-जोखा) दीवान-ए-बयुतात (कारखानों के कार्य) मुशरिफ (मुख्य लेखपाल)

ii) मीर बख्शी (Mir – Bakshi) :→

सैनिक विभाग का अध्यक्ष मीर बख्शी कहलाता था। सैनिकों की भर्ती करना, उनका हुलिया रखना, घोड़ों एवं हथियारों को दाग लगवाना, सैनिकों के शास्त्रों, वस्त्रों, घोड़ों, शिक्षा, एवं रसद का प्रबंध करना मीर बख्शी का मुख्य कार्य था। इब्न हसन के शब्दों में मीर बख्शी का प्रभाव क्षेत्र

Scanned with OKEN Scanner

उसके अपने विभाग से बाहर तक फैला हुआ था। और दरबार में बादशाह से उसकी निकटता के कारण उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई।
साम्राज्य के विस्तार के कारण केन्द्र में मीर बख्शी की सहायता के लिए दो अन्य बख्शी भी होते थे जो क्रमशः दूसरे व तीसरे बख्शी कहलाते थे।

iii) **खान - ए - सामाँ** (*Khan-i-Saman*) :⇒ अकबर के समय यह पद मंत्री का नहीं था। परन्तु उसके उत्तराधिकारियों के समय में यह पद पूर्णतया मन्त्री पदों में से एक स्वीकार किया गया। इसका मुख्य कार्य साम्राज्य एवं राजकीय परिवार में सम्बन्धित सदस्यों की जरूरतों की पूर्ति एवं देखरेख करना था। वह शाही भोजन भण्डार खजाना, उपहार एवं नजराने आदि की देख-

करता था। उसका एक अन्य उत्तरदायित्व शाही कारखानों की देखभाल करना भी था। जहाँ वस्तुओं का उत्पादन होता था। और जो राज्य की आय के एक बड़े साधन थे।

iv) **सद्र - उस - सुदूर** (*Sadar-us-Sudur*) :→ यह धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार था। उसे न्याय विभाग का भी प्रदान कहा गया था। दान - पुण्य की व्यवस्था करना, धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था, विद्वानों व साधु - संतों के लिए राजकीय अनुदान की व्यवस्था करना तथा इस्लाम के कानूनों के पालन की देखभाल करना इसके प्रमुख कर्तव्य थे। न्याय विभाग के प्रमुख की हैसियत से सद्र काजियों एवं मुफ्तियों की नियुक्ति कहलाता था। वह राजकीय दान - विभाग का अध्यक्ष होता है। उलेमाओं को राज्य

को राज्य द्वारा जागीर देना भी इसी का कार्य था। अब वे बादशाह सिर्फ दान चलाने के लिए सिफारिश ही कर सकते थे।

v) मुख्य काजी (Qazi-ul-kujat) :→ मुगल बादशाह राज्य का सबसे बड़ा न्यायधीश होता था तथा वह प्रत्येक बुधवार को अपनी कचहरी कहलाता था। परंतु बादशाह सभी मुकदमों का निर्णय नहीं कर सकता था इसलिए राजधानी में सम्राट की सहायता के लिए एक मुख्य काजी (न्यायधीश) होता था।

vi) मुहतसिब (Muhatsib) :→ जनता के नैतिक चरित्र की देखभाल करने वाले विभाग का अध्यक्ष (मुहतसिब) कहलाता था। परंतु व्यावहारिक दृष्टि से इसका कार्य क्षेत्र मुसलमानों तक ही सीमित था।

इसका मुख्य कार्य यह देखना था। कि जनता इस्लाम के कानूनों के अनुसार जीवनयापन कर रही है।

vii) मीर आतिश (Mir atish) :→ तोपखानों विभाग का अध्यक्ष और मीर आतिश कहलाता था।

viii) दरोगा-ए-डाक-चौकी (Daroga-i-Dak Chauki) :⇒ मुगल शासन के अंतिम दिनों में सूचना एवं डाक विभाग का काफी महत्व बढ़ गया था, अतः इसके लिए अलग से एक विभाग का गठन किया गया।

B) प्रान्तीय शासन व्यवस्था :⇒ दिल्ली के सुल्तानों के समय साम्राज्य निश्चित रूप से निश्चित सीमांकित प्रान्तों में विभाजित किया गया।

मनसबदारी और जागीरदारी प्रणाली
Mansabdari and Jagirdari System

Que 1) जागीरदारी व्यवस्था पर निबंध लिखिए —

Ans. → मनसबदारी प्रथा एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक संस्था थी। 'मनसब' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अकबर कालीन ऐतिहासिक लेखों में देखने को मिलता है। अर्थात मनसबदारी प्रथा का प्रचलन सर्वप्रथम मुगल सम्राट अकबर द्वारा किया गया। यह व्यवस्था अकबर के उत्तराधियों के काल में भी कुछ संशोधनों के साथ सैनिक तथा नागरिक सेवाओं का आधार बनी रही।

Historical Background :→ मुगल कालीन मनसब व्यवस्था के बीच मध्य एशिया में मंगोलो द्वारा अपनायी गयी सैनिक पद्धति एवं परंपरा में ढूंढे जा सकते थे।

मंगोलों का आक्रमण (1221-1327) ई० तथा उसके सम्पर्क के कारण सैनिक की भर्ती तथा सैनिक व्यवस्था के सिद्धान्तों का ज्ञान भारतीयों को हुआ। परिणामस्वरूप अलाउद्दीन खिलजी द्वारा प्रथा प्रारंभ की गई। जो मनसब व्यवस्था की प्रस्तावना कही जा सकती थी।

मनसबदारी प्रथा का उद्भव :→ भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना एवं स्थिरता का आधार मुगलों के बीच की सेना थी। प्रथम मुगल साम्राट बाबर अपनी विजयों में व्यस्त रहने के कारण सैनिक संगठन की तरफ विशेष ध्यान नहीं दे सकता।

मनसब का अर्थ :→ मनसब अरबी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ होता है (पद) अथवा (स्थान)। मनसब किसी भी व्यक्ति का प्रशासन में

दर्जा, वेतन, दरबार में उसके स्थान तथा उसके घुड़सवारों, हाथियों एवं छकड़ों की संख्या को निश्चित करता था। मनसब से किसी व्यक्ति या अमीर मुगल प्रशासनिक सेवा में स्थिति का बोध होता था। अकबर ने अपने शासनकाल के 11 वर्षों से लेकर अन्त तक मनसबदारी व्यवस्था के स्वरूप में परिवर्तन किया जाता था। जिसका विवरण इस प्रकार है —

1) अकबर ने 1566–67 ई० में सैनिक उत्तरदायित्व सबंधी नियम बनाये। अमीर वर्ग को 'सवार' पद एवं प्राप्त जागीर के भू-राजस्व के आधार पर घुड़सवार रखने का आदेश दिया गया।

2) 1596–97 ई० के पश्चात 'मनसब' को दो पदों — 'जात' एवं 'सवार' की संख्या के रूप में दर्शाया जाने लगा।

मनसबदारों की नियुक्ति :— सैद्धान्तिक रूप से मनसबदारों की नियुक्ति पदोन्नति एवं पदावनति सम्बंधी सभी विशेषाधिकार सम्राट के पास थे। नौकरी के लिए इच्छुक व्यक्तियों को मीर बख्शी सम्राट के सामने पेश करता था। मनूची ने लिखा गया है कि बिना जमानत के मनसब नहीं मिलते थे। मनसबदार की पदोन्नति का आधार भी सम्राट की इच्छा थी तथा निरीक्षण के दौरान कोई मनसबदार अपने सैनिकों के द्वारा यदि सम्राट को प्रभावित कर लेता तो उसका मनसब बढ़ा दिया जाता था।

मनसबदारों का वेतन :— मोरलैण्ड के अनुसार मनसबदारों को पूरे वर्ष का वेतन नहीं मिलता था। अपितु पूरे वर्ष में आठ या नौ महीने का ही वेतन मिलता था।

मनसबदारी के गुण :⇒

अकबर के द्वारा स्थापित मनसबदारी व्यवस्था में अनेक अच्छी बातें थी। यद्यपि यह व्यवस्था सैनिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती थी इस व्यवस्था के निम्नलिखित गुण थे —

1) मनसबदारी व्यवस्था से मुगल सम्राटों को एक विशाल सेना प्राप्त हो सकी जिसके कारण मुगल साम्राज्य का पर्याप्त विस्तार हो चुका था।

2) मनसबदारी प्रणाली से मुगलों को एक विशाल क्षेत्र में शांति एवं व्यवस्था स्थापित करने में मदद मिली।

3) मनसबदारों के अच्छे वेतनों में विदेशों से अनेक योग्य व्यक्तियों को मुगल सेवा में आने के लिए आकर्षित किया।

4) इस व्यवस्था में जागीरदारी प्रथा के अनेक दोषों को दूर करके मुगल प्रशासन को सुव्यवस्थित करने में मदद मिली।

मनसबदारी प्रणाली के दोष :⇒

इन दोषों के कारण अकबर के उत्तराधिकारी के शासनकाल में इसका स्वरूप इतना भ्रष्ट हो गया कि विशाल सेनाओं को रखने के लिए उन पर उधार धनराशि खर्च करने के बाद भी मुगलों को उनके छोटे-छोटे राजाओं एवं सरदारों से पराजित होना पड़ा।

मनसबदारों द्वारा निश्चित संख्या में सेना न रखना तथा उन पर दुरुपयोग करना इस व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष था। जाँच के समय मनसबदार किराये के सैनिकों तथा घोड़ों को प्रस्तुत कर देते थे यद्यपि उन दोषों को दूर करने के लिए दाग-महली का गठन किया गया।

जमींदारी प्रणाली

Zamindari System

Page :

Date :

1) जमींदारी प्रणाली पर एक निबंध लिखिए =>

मुगल काल में जमींदार एक अधीन सरदार होता था। उसका केन्द्र द्वारा सीधे शासित होता था। जमींदार का शाब्दिक अर्थ होता था 'जमीन को रखने वाला'। पंद्रवीं सदी में बनी और अफीम जमींदार शब्द का प्रयोग अपने विवरणों में किया है। अबुल फजल ने जमींदार के लिए 'भूमि' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। धीरे-धीरे जमींदार शब्द का प्रयोग अधिक किया जाने लगा। जमींदार के लिए 'मालिक' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। तालुकादार शब्द का प्रयोग कि जमींदारी और जमींदार के लिए किया जाने लगा। जमींदारी गांव से संबंधित थी। न कि खेत से।

Page :

Date :

इसका संबंध मुगल काल में किसानों से पृथक ग्रामीण वर्ग से था। सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य में 'रैयती' और 'जमींदारी' गांवों का विभाजन था। दूर के प्रान्त गुजरात में भी भूमि 'रैयती' गांव और जमींदार के तालुका में बटी हुई थी। जमींदार अपने गांव की आमदनी राजकोष में जमा करता था। गांव के सभी "रैयती" हो या 'जमींदारी' हो तो अनुमान लगाया जा सकता है कि जमींदारी किसानों के अधिकार भूमि पर अलग-अलग रहे होंगे। इससे तात्पर्य यह है कि जहां जमींदारों के अधिकार होंगे वहां किसानों के अधिकार नहीं होंगे। और जहां किसानों के अधिकार होंगे। वह जमींदारों के अधिकार नहीं होंगे। मुगल में जमींदार राज्य को पूरे गांव को निर्धारित कर

Scanned with OKEN Scanner

देते थे। मुगल साम्राज्य में जमींदारी को वंशानुगत बनाने के लिए एक विधान था। मुगल काल में जमींदारी को उत्तराधिकार संबंधी समस्याओं को हल करने के लिये और हिन्दु और मुस्लिम कानूनों को आधार बनाया गया था। जमींदारी अविभाज्य इकाई नहीं समझी जाती थी। ऐसे दृष्टान्त मिले हैं कि जमींदारी का विभाजन कई दावेदारों के बीच किया गया था। इस प्रकार जमींदारी का विभाजन से कभी दावेदार को गाँव की भूमि का केवल एक छोटा भाग ही मिला था। जमींदारी के क्रय और विक्रय का सिद्धान्त 18 वीं शताब्दी के मुगल के साम्राज्य विभाग के कागजात से पता चलता है।

Que-2 → मुगलों के जमींदारों के बीच संबंधों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Ans → 'जमींदार' शब्द का शाब्दिक अर्थ जमीन का मालिक या भूमि का स्वामी होता है। अंग्रेजी पर्याय के रूप में 'Landlord' शब्द चलन है यह शब्द दिल्ली सल्तनत और मुगल काल दोनों चलता था। सामान्य रूप में यह उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता था जो निम्नलिखित शर्तों में से कोई शर्त पूरी करते थे।

1) जिसके पास वंश परंपरा से प्राप्त जमीन होती थी और जिस पर वे एक निर्धारित 'पेशकश' देते थे।
2) पेशकश नहीं देते थे पर जिसके पास बाप-दादों से मिली जमींदारी "जगीर" के रूप में रहती थी।
3) जमींदार जो विस्तृत मूल्यांकन के बाद "मालवाजिब" अदा करते थे।

(4) ताल्लुकदार
(5) आसामी मुखिया अर्थात् सरदार तथा राजा।

भारतीय इतिहासकार "जमींदारी" शब्द को कोई निश्चित परिभाषा नहीं देते। अलग-अलग क्षेत्रों में 'जमींदारी' के लिए पर्याय चलते थे। उनमें से कुछ हैं खोती, मुकद्दमी, बिसवी भौमी आदि। इसे अरबी शब्द "मिल्कियत" के समानार्थी के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। इरफान हबीब के अनुसार 'जमींदारी' से तात्पर्य उस अधिकार से था जो ग्रामीण वर्ग में तो निहित था। पर कृषक वर्ग से अलग और ऊपर होता था। हबीब इस वर्ग में सामान्य जमींदारों और स्वायत्त सरदारों दोनों को सम्मिलित मानते हैं।

जमींदारी प्रथा का उद्भव :⇒

दिल्ली के सुल्तानों और बादशाहों दोनों ने जमींदारी प्रथा को मान्यता दी थी पर उन्होंने इसे शुरुत नहीं किया था। यह प्रथा तो किसी-न-किसी रूप में पहले से ही चली रही थी। जमींदारी प्रथा या जमींदारों का ऐतिहासिक उद्गम कहाँ था, इसके बारे पर्याप्त आधार सामग्री नहीं मिलती इसीलिए हमें स्थानीय परंपराओं का सहारा लेना पड़ेगा। कि प्राक्कल्पना के अनुसार जमींदार वर्ग की उत्पत्ति में किसी एक जाति विशेष या गोत्र विशेष के उन सदस्यों का हाथ था जो निरंतर एक स्थान पर बसते थे। आइन-ए-अकबरी में आए "बारह प्रान्त" को वर्णन की, जिसमें जातियों का आधार पर प्रादेशिक प्रभागों पर जमींदारों का स्वामित्व

दिखाया गया है। अबुल फजल और अन्य समसामायिक लेखकों की रचनाओं में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारत में भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व की प्रथा आदि काल से चली आ रही थी।

संरचना ⇒ कृषि योग्य तथा अकृषीय भूमि पर हर तरह से प्राथमिक जमींदारों का स्वत्वाधिकार होता था। इस वर्ग में केवल वे ही सम्मिलित नहीं है जो भूमित्व होने के साथ-2 या ही स्वयं खेती-बाड़ी करते थे। या भाड़ा मजदूरों से करवाते थे। बल्कि वे भी सम्मिलित है जो एक या अधिक गाँव के स्वामी होते थे। साम्राज्य की सारी कृषि सामान्य जमींदारों की तुलना में इसके अधिकार क्षेत्र बड़े बड़े होते थे।

मुगल साम्राज्य का पतन

Que 1 ⇒ मुगलों की कृषि नीतियाँ कहाँ तक मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार थी।

Ans ⇒ बाबर से लेकर औरंगजेब तक का काल मुगल साम्राज्य के उत्थान एवं विकास का काल था परंतु 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही मुगल साम्राज्य की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में कमी आने लगी। मुगल दरबार, संघर्षों, दुर्घटनाओं, कुचक्रों, षड्यन्त्रों एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन गया। मुगल साम्राज्य का पतन के निम्न कारण थे। जो इस प्रकार है

1) जागीरदारी संकट ⇒ प्रो० सतीश चंद्र एवं इरफान हबीब ने अपने महत्वपूर्ण अनुसंधानों द्वारा मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों के विषय में नई बहस छेड़ी है उन्होंने साम्राज्य की प्रकृति और पतन

तथा पतन को समझने के लिए उसकी कार्यपद्धति एवं योजनाओं का परीक्षण किया तथा साम्राज्य के पतन के लिए मनसबदारी एवं जागीरदारी प्रणालियों की असफलताओं को जिम्मेवार बताया।

2) कृषि संकट ⇒ प्रो० इरफान हबीब ने मुगलों के राजस्व वसूली व्यवस्था में दोषों को साम्राज्य के लिए पतन का जिम्मेदार माना है उन्होंने लिखा है। कि साम्राज्य की सुरक्षा के लिए बड़ी-2 सेनाएँ रखी जाती थी उनका खर्चा चलाने के लिए राजस्व दर ऊँची रखी जाती थी।

3) केन्द्र एवं क्षेत्रीय संबंधों में तनाव ⇒ प्रो० सतीश चन्द्र सिंह ने मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों 18 वीं सदी के केन्द्र व विभिन्न क्षेत्रों के बीच सामाजिक एवं राजनैतिक संतुलन बिगड़ने को माना है। इन विद्वानों की मान्यता है कि मुगल साम्राज्य विभिन्न स्तरों पर संघर्षरत समुदायों और विभिन्न देशी सामाजिक - राजनैतिक व्यवस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करता था।

4) उत्तराधिकारी के नियम अभाव ⇒ मुगलों में इस प्रकार का कोई नियम नहीं था। कि बादशाह के बाद उसका उत्तराधिकारी कौन होगा। बादशाह की मृत्यु के पश्चात तथा कभी-2 उसके जीवनकाल में ही जैसा की शाहजहाँ के समय में हुआ। उसके पुत्रों में युद्ध हो जाता था। तथा विजयी राजकुमार अपने प्रतिद्वंद्वियों का मौत के घाट उतार देता था।

5) जन - सम्पर्क का अभाव ⇒ अकबर को छोड़कर और कोई मुगल सम्राट भारतीय जनता के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित नहीं कर सका। उन्होंने जन - सामान्य की दशा को समझने, उसके हितों की रक्षा करने के लिए तथा उनके जीवन को सुख - सुविधा पूर्ण बनाने के लिए कोई भी कदम नहीं उठाया।

6) जल सेना उपेक्षा ⇒ मुगल सैनिकों की सबसे बड़ी कमी यह थी कि उन्होंने जल सेना का कोई महत्व नहीं दिया। शाहजहाँ तथा औरंगजेब के शासन काल में मुगलों की जल सेना के अभाव के कारण विदेशी यूरोपियनों के सामने झुकना पड़ा। समुद्र में भारतीय व्यापारियों के जहाज लूट के लिये जाते थे।

अन्य निम्न कारण ⇒

1) स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश शासन पद्धति
2) मुगल अमीर एवं सरदारों का चरित्रहीन होना
3) अमीरों षड्यन्त्र एवं दलबन्दी
4) मुगल साम्राज्य का आर्थिक दिवालियापन
5) मुगल साम्राज्य की विशालता एवं मुराठों का उत्कर्ष
6) औरंगजेब का उत्तरदायित्व
7) औरंगजेब की हिन्दु विरोधी नीति
8) शियाओं पर अत्याचार
9) अविवेकपूर्ण दक्षिण नीति
10) सन्देहशील स्वभाव
11) रिक्त राज कोष
12) औरंगजेब के दुर्बल तथा अयोग्य उत्तराधिकारी
13) प्रान्तीय सूबेदारों की स्वतन्त्रता

औपनिवेशिक राज्य ~~की संरचना~~

Construction of the Colonial state

Que 1) भारत में ब्रिटिश भू-राजस्व परिवहन तथा संचार नीतियां पर एक निबंध लिखिए।

Ans) ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा अपनायी गई भू-राजस्व नीतियों का ब्रिटिश आर्थिक नीतियों में महत्वपूर्ण स्थान है। 1765 ई० की इलाहाबाद की सन्धि द्वारा कंपनी को समस्त बंगाल की दीवानी मिल अधिकार मिल गए थे। लार्ड क्लाइव ने राजस्व वसूल करने के लिए दो नायब दीवान नियुक्त किए। बंगाल में मुहम्मद रजा खाँ तथा बिहार में शिताब राय को यह काम दिया गया। दोनों नायब दीवान राजस्व वसूल करके नवाब के कोष में जमा करवा देते थे। तथा नवाब कोष से यह राशि कंपनी के कोष में स्थानान्तरित कर दी जाती थी। पहले पहले एक वर्ष के लिए ठेका नीलामी पर उठाया जाता था लार्ड कार्नवालिस ने भारत आने पर इस समस्या पर विचार किया जाता उसने सर जॉन शोर के परामर्श के पश्चात 1793 ई० में स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को अपनाया। इनका विवरण इस प्रकार है —

1) **स्थायी बंदोबस्त** ⇒ लार्ड कार्नवालिस 1787 ई० में जब भारत का गवर्नर-जनरल बनकर भारत आया था। उस समय कंपनी सरकार ठेकेदारी प्रणाली द्वारा बंगाल में लगान इकट्ठा करवाती थी। कंपनी की आय बढ़ाने के लिए कार्नवालिस ने राजस्व मण्डल अध्यक्ष सर ~~स~~ जॉन शोर तथा जेम्स ग्राण्ट की सलाह पर 1790 ई० में लगान दर बढ़ाने लगी। इस बंदोबस्त की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार थी —

i) जमींदारों को भूमि का वास्तविक स्वामी मान लिया गया।

ii) जमींदारों में राजस्व की दर निश्चित कर दी गई जो 1765 से दुगुनी थी।

iii) जमींदारों के न्यायिक अधिकार छीन लिए गए।

2) रैयतवाड़ी बन्दोबस्त :→ इस भूराजस्व व्यवस्था में किसान व सरकार के बीच सीधा समझौता होता था। सर्वप्रथम पहल मद्रास के बड़ामहल जिले में 1792 ई० में रीड एवं थामस मुनरो ने यह मद्रास व्यवस्था लागू की थी। प्रारंभ में यह समझौता 10 वर्ष के लिए किया जाता था। 1820 ई० में जब मुनरो मद्रास का गवर्नर बना तो इसने इस प्रणाली को मद्रास के सभी जिलों में लागू कर दिया गया। बाद में यह प्रणाली बम्बई, सिन्ध बर्मा व बिहार में लागू की गई थी।

3) महालवाड़ी बन्दोबस्त :→ उत्तरी भारत में एक अलग तरह की भू-राजस्व व्यवस्था को लागू किया गया जिसे 'महालवाड़ी' के नाम से पुकारा जाता है। उत्तरी भारत में मुगल काल से ही जमींदारों तथा ग्राम पंचायतों में अधीन भू-भाग को 'महाल' कहते थे तथा सरकार ने प्रत्येक 'महाल' के साथ भू-राजस्व निर्धारित किया गया।

4) परिवहन तथा संचार नीति :→ 19वीं सदी के मध्य तक इंग्लैंड में तेज गति से औद्योगिक विकास हुआ। औद्योगिक विकास के कारण जहां एक तरफ वहां के पूंजीपतियों के पास अत्यधिक पूंजी एकत्र हो गई। जिसका निवेश इंग्लैंड में करने के कम लाभ प्राप्त होता था, अतः अत्यधिक लाभ लेने के लिए उसका विदेश अनिवार्य था।

Unit : 3

औपनिवेशिक राज्य : राजनीतिक अर्थव्यवस्था
Colonial state : Political Economy

प्रश्न 1 -> स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी व्यवस्था व महालवाड़ी व्यवस्था पर एक नोट लिखो —

Ans :-> प्रशासन का स्वरूप एवं उसका विकास स्थानीय सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप होता है। वह सामान्यतः समाज के विकास और उसकी समृद्धि में सहायता प्रदान करता है। परंतु ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल - विजय के उपरान्त जो प्रशासनिक व्यवस्था भारत में स्थापित की, वह उन धारणाओं के विपरीत थी। कंपनी की प्रशासनिक व्यवस्था के पूर्व बंगाल में मुगल व्यवस्था लागू थी। जिसका प्रतिपादन 1582 ई० में टोडरमल के द्वारा किया गया था। किंतु थोड़े समय उपरांत कंपनी ने इस क्षेत्र पर गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया गया तथा दिशा में कदम उठाए। भू - राजस्व के क्षेत्र में किए गए इन कार्यों का अध्ययन हम मुख्य रूप से निम्नलिखित चार शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं —

1) स्थायी बंदोबस्त
2) रैयतवाड़ी प्रणाली
3) महालवाड़ी प्रणाली
4) कुटीर उद्योग का पतन एवं अनौद्योगीकरण।

इनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है —

1) **स्थायी बंदोबस्त** -> 1789 ई० में जब कार्नवालिस गवर्नर जनरल बनकर भारत में भूमि की स्थिति बड़ी खराब थी। उन्होंने स्वयं लिखा है कि "भारत का एक तिहाई भाग जंगल के समान है। जिसमें जंगली जानवर रहते हैं। लार्ड कार्नवालिस ने इस समस्या पर सात वर्ष तक विचार किया और काफी सोच - विचार कर अपनी भू - राजस्व व्यवस्था की घोषणा की जो कि स्थायी बंदोबस्त के नाम से जानी जाती थी।

Page :
Date :

अर्थ - लार्ड कार्नवालिस के शासन की अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना थी इस व्यवस्था का प्रमुख प्रावधान इस प्रकार है -

1) जमींदारों को भूमि का स्वामी मान लिया।
2) 1793 ई० जो भू-स्वामी थे उन्हें ये अधिकार दे दिये गये।
3) जमींदारों के न्यायिक अधिकार समाप्त कर दिये गये।

उद्देश्य - इस व्यवस्था को लागू करने के पीछे उद्देश्य इस प्रकार थे -

1) भूमि की उर्वरकता में वृद्धि हो ताकि उत्पादन बढ़े
2) किसानों के शोषण पर रोक लगाई जा सके
3) कंपनी की आर्थिक स्थिति में सुधार
4) भू-राजस्व में होने वाली आय निश्चित हो जाए तथा लगान वसूली के झंझटों से उसे मुक्ति मिल जाए।

Page :
Date :

रैयतवाड़ी प्रथा ⇒ मद्रास प्रान्त में बड़ा महल जिले में सर्वप्रथम 1792 ई० में भू-राजस्व की यह प्रणाली कैप्टन रीड तथा थामस मुनरो द्वारा लागू की गई। वास्तव में थामस मुनरो ही इस प्रणाली का प्रवर्तक था। 1820 ई० में जब वह मद्रास का गवर्नर बना तो उसने इस प्रणाली को सम्पूर्ण मद्रास प्रान्त में लागू किया। बाद में यह प्रणाली बाम्बे प्रान्त में लागू किया गया

महालवाड़ी प्रथा ⇒ 19 वीं शताब्दी के प्रथम दशक में कंपनी को उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों की प्राप्ति हुई। ये सत्तान्तरित तथा विजित क्षेत्र थे। जो अवध के नवाब ने 1801 ई० में कंपनी के सन्धि के अंतर्गत सौंपा था। इसमें सात जिले थे - इटावा, मुरादाबाद, फर्रुखनगर, कानपुर, गोरखपुर, और बरेली।

unit-4

Que2 → अंग्रेजी आर्थिक नीतियों के विभिन्न प्रभावों का वर्णन कीजिए-

Ans मुगल सम्राट बाबर द्वारा स्थापित तथा महान मुगल सम्राट अकबर द्वारा संवर्धित विशाल मुगल साम्राज्य 1771 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात पतन की तरफ जाने लगा। मुगल साम्राज्य के खण्डहरों पर देश में अनेक छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्य उभर कर आए। ये छोटे-छोटे राज्य मुगल शक्ति का स्थान लेने के लिए आपस में लड़ने लगे। ऐसा लग रहा था कि मराठा शक्ति मुगल सत्ता का स्थान ले लेगी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। भारत की इस अराजक स्थिति का लाभ उठाकर यूरोपियन व्यापारिक कंपनियों ने, जो 15 वीं सदी के अन्त में वास्कोडिगामा का अनुकरण करते भारत आयी थी, भारत की राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया।

व्यापारिक लाभ लेने के लिए ये विदेशी शक्तियाँ भारतीय राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप करने लगी भारतीय राज्य यूरोपियन लोगों की उच्च आर्थिक अवस्था और प्रौद्योगिकी का सामना नहीं कर सके अपनी अन्य प्रतिद्वन्दी कंपनियों की उन इसप्रकार 1600 ई० में स्थापित 'ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी' अन्ततः भारत में अपना व्यापारिक एकाधिकार स्थापित करने में सफल रही।

वाणिज्य नीति - 20 साल के लम्बे इतिहास में ब्रिटिश शासन का मूल स्वरूप एक सा नहीं रहा। विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में ब्रिटिश स्थिति के साथ भारत में भी उपनिवेशवाद की प्रकृति में परिवर्तन होते रहे परन्तु जैसा कि प्रो० विपिन चन्द्र ने लिखा है- "उपनिवेशवाद के मुख्य उद्देश्य में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। भारत में औपनिवेशिक शासन की प्रकृति व नीतियाँ ब्रिटेन

के सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक विकास के बदलते हुए ढाँचे के अनुसार परिवर्तित होती रही।" रजनी पाम दत्त ने अपनी राजनैतिक विकास के बदलते हुए ढाँचे के अनुसार परिवर्तित होती रही।" रजनी पाम दत्त ने अपनी पुस्तक 'इंडिया टुडे' में भारतीय औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद और आर्थिक शोषण संबंधी कार्ल मार्क्स के तीन चरणों वाले सिद्धान्त को स्वीकार की स्वीकार किया है। ये चरण हैं- वाणिज्यिक पूंजीवाद (व्यापारिक एकाधिकार), औद्योगिक पूंजीवाद (मुक्त व्यापार) तथा 'वित्तीय पूंजीवाद'। विभिन्न चरणों में ब्रिटिश वाणिज्यिक नीति का विवरण इस प्रकार है-

(1) 1757 से पहले वाणिज्य नीति —

1600 ई० में इंग्लैण्ड की सरकार ने एक चार्टर द्वारा 15 वर्षों के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी को पूर्वी देशों से व्यापार करने का अधिकार दिया था। यह एकाधिकार कंपनी के पास 1813 ई० तक बना रहा। कंपनी ने भारत में अनेक फैक्ट्रियाँ स्थापित की। सबसे पहले सूरत में अंग्रेजों ने अपनी फैक्ट्री स्थापित की। 1757 ई० तक कंपनी ने अपनी अनेकों फैक्ट्रियों की स्थापना कर ली थी।

Page :
Date :

Q-(1) भारत मे राष्ट्र राज्य के विकास पर एक निबन्ध लिखिए।

Ans कांग्रेस तथा भारत की अन्तरिम सरकार देशी की स्वतंत्रता की प्रवृत्ति से चिंतित हो उठी। भारत की स्वतंत्रता के निर्णय साथ ही भारत सरकार के राजनीतिक विभाग का भी अन्त हो गया। उसके स्थान पर भारत की राष्ट्रीय सरकार ने एक रियासत विभाग की स्थापना की। इसके मंत्री सरदार पटेल बने और सचिव वी० पी० मेनन। उन्होंने 565 रियासतों की अगस्त 15 से पहले भारत मे मिलाने का फैसला किया। भारत के रियासत विभाग ने देशी राजाओं से अपील की कि वे अपनी रियासतों की भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुए भारत मे मिल जाएँ।

Page
Date

देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय :

रियासतों के भारत मे विलय की विकट समस्या को न लार्ड लिनलिथगो व लार्ड वेवल नही सुलझा सके थे। उसी गम्भीर समस्या को लार्ड माउण्टबेटन के चातुर्य, सरदार पटेल की महान राजनीतिज्ञता तथा बीकानेर, पटियाला, बड़ोदा, ग्वालियर तथा जयपुर के नरेशों की देशभक्ति ने दो मास के अल्पकाल मे हल कर दिया।

राज्यों का प्रजातान्त्रीकरण :

देशी राज्यों का भारतीय संघ मे प्रवेश व उनका निकटवर्ती प्रान्तों मे विलीन होने का एक ही लक्ष्य था।

Scanned with OKEN Scanner

स्वतंत्रोत्तर शामिल की जाने वाली रियासतें :-

जूनागढ़ :- भारतीय संघ ने रियासतों को अपने में मिलाने का आधार वहाँ की जन इच्छा को रखा था

हैदराबाद :- हैदराबाद जनसंख्या की दृष्टि से उस समय की सबसे बड़ी रियासत थी।